राज्य विद्यालय नेतृत्व अकादमी, झारखंड

मॉडयूल-5

झारखंड के विद्यालयों में नवाचार की संस्कृति का विकास

"समय-समय पर, एक नई तकनीक, एक पुरानी समस्या

और एक बड़ा विचार एक नवाचार में बदल जाता है।"

-डीन कामेन

मॉडयूल 5.1. नवाचार का अर्थ, उद्देश्य, महत्व एवं क्षेत्र

अधिगम प्रतिफल

1.1 नवाचार का अर्थ
1.2 नवाचार का उद्देश्य
1.3 विद्यालय में नवाचार का महत्व
1.4 नवाचार के विभिन्न क्षेत्र

मॉडयूल 5.2. नवाचार : शिक्षण संस्थान का केंद्र बिंदु

अधिगम प्रतिफल

- विद्यालय प्रधान नवाचारों के लिए मुख्य प्रेरणा स्रोत
- नए विचारों की खोज के लिए संवाद, विचार मंथन और योजना
- नए विचारों एवं पद्धतियों का स्वागत

मॉडयूल 5.3. झारखंड के विद्यालयों में नवाचार की संस्कृति का विकास

अधिगम प्रतिफल

1.1 नवाचार : प्रयोगों और अनुसंधान को बढ़ावा
1.2 उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति
1.3 शिक्षकों/अभिभावकों/विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का सम्मान
1.4 चुनौतियों की पहचान एवं समाधान
1.5 नवाचारक के रूप में छात्र, अध्यापक तथा समुदाय
1.6 नवाचारों का दस्तावेजीकरण
1.7 नवाचारों की मान्यता एवं पुरस्कार

झारखंड के विद्यालयों में नवाचार की संस्कृति का विकास

मोड्यूल 1. नवाचार का अर्थ, उद्देश्य, महत्व एवं क्षेत्र

अधिगम प्रतिफल

1.5 नवाचार का अर्थ
1.6 नवाचार का उद्देश्य
1.7 विद्यालय में नवाचार का महत्व
1.8 नवाचार के विभिन्न क्षेत्र

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words)

नवीन प्रवृत्ति, नवाचार, हितधारक, वैश्वीकरण, अवधारणा

भूमिका

आज के परिदृश्य में तेज़ी से गुणात्मक विकास के लिए 'नवाचार' आवश्यक है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने भी विविध संदर्भों में **आउट-ऑफ़-द-बॉक्स विचारों एवं नवाचारों को प्रोत्साहित** करने की बात कही है। ई.सी.सी.ई. **राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय नवाचार एवं सर्वोत्तम प्रथाओं पर नवीनतम शोध** को शामिल करने की बात भी करता है। (**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020**, पृ.सं.7,8)

'नवाचार' दो शब्दों के योग से बना है **'नव'** और '**आचार'**। शाब्दिक आधार पर कहा जा सकता है कि जो परिणामों में नवीनता का संचार करे 'नवाचार' कहलाता है। इसकी परिभाषा देते हुए **रोजर्स, ई.एम्.** ने कहा है- "नवाचार वह विचार है, जिसकी प्रतीति, व्यक्ति नवीन विचार के रूप में करे।" **माइलैक्स, एम्.बी.** के अनुसार- "नवाचार वह नवीन और विशेष परिवर्तन है, जो समझ-बूझकर किया गया है। उद्देश्य-प्राप्ति की दृष्टि से, यह परिवर्तन, अन्य विधियों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली समझा जाता है।

इस प्रकार, हम कह सकते हैं कि 'नवाचार' वह सोद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है जिसके द्वारा सुनियोजित तरीके से कम लागत/शून्य लागत में परिवर्तन किया जा सके। इसकी प्रक्रिया सरल हो ताकि इसे आसानी से क्रियान्वित किया जा सके।

नवाचार का उद्देश्य विद्यालय की चुनौतियों को समझना और उसे प्रभावी ढंग से समाधान करना है। इसका उद्देश्य विद्यालय एवं विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास है। अतः इसका क्षेत्र विद्यालय की संरचनात्मक एवं शैक्षणिक व्यवस्था एवं अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति तक विस्तृत हो जाता है।

गतिविधि-1

सर्वप्रथम प्रतिभागियों को पाँच समूहों में बाँट दिया जायेगा। सभी प्रतिभागियों को दो अलग-अलग रंगो के कागज के टुकड़े दिए जाएँगे। इन कागज के टुकड़ों से पाँच मिनट के अन्दर कुछ भी बनाने का निर्देश दिया जायेगा।

निर्धारित समयावधि समाप्त होने के बाद सभी को अपनी बनाई हुई वस्तु प्रदर्शित करने के लिए कहा जाएगा।

चर्चा के प्रश्न

- आपने क्या बनाया है?
- इसका उपयोग शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कैसे किया जा सकता है?
- क्या इसे बनाने से पहले आपने कुछ सोचा था कि इसे कैसे बनाना है?

निष्कर्ष

हम सीमित संसाधन में भी अच्छा कार्य कर सकते हैं। सभी व्यक्ति रचनात्मक कार्य कर सकते हैं सिर्फ इच्छा शक्ति की आवश्यकता है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है और किसी भी वस्तु में व्यक्ति परिवर्तन कर उपयोगी बना सकते हैं। किसी कार्य को नए तरीके से करना ही नवाचार है।

परिचर्चा
नवाचार का क्या उद्देश्य है?
शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार का क्या उद्देश्य हो सकता है?

निष्कर्ष: नवाचार का मुख्य उद्देश्य होता है समस्याओं का समाधान करना, विकास को गति देना, और सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करना। नवाचार के माध्यम से लोग नए और सुधारित रास्ते खोजते हैं जो समस्याओं को हल करने और नए अवसरों को पहचानने में मदद कर सकते हैं।

शिक्षा क्षेत्र में नवाचार के कई उद्देश्य हो सकते हैं, जो शिक्षा को अद्वितीय और सुधारित बनाने का प्रयास करते हैं। नवाचार के माध्यम से शिक्षा क्षेत्र में नए और प्रभावी तरीकों को लागू करने का प्रयास करते हैं जिससे छात्रों को बेहतर शिक्षा मिल सके।

गतिविधि-2

प्रतिभागियों में पेपर स्ट्रिप बाँटते हैं। प्रतिभागियों को निर्देशित किया जाता है कि पेपर स्ट्रिप के दोनों छोर को इस प्रकार जोड़े की इनके सतह पर उंगली फेरने से कभी रुके नहीं, सतत चलती रहे।

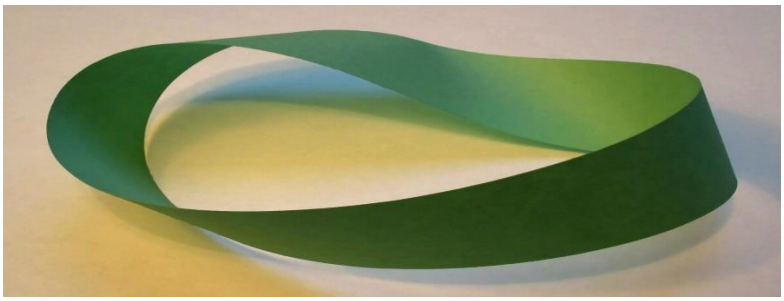

प्रश्न- इस गतिविधि से आपकी क्या समझ विकसित होती है?

निष्कर्ष- जिस प्रकार सीखना एक सतत प्रक्रिया है उसी प्रकार नवाचार भी कभी ना रुकने वाली सतत प्रक्रिया है इस स्ट्रिप को मोबियस स्ट्रिप कहते हैं। मोबियस ने 'सीखना एक सतत प्रक्रिया है' को समझने के लिए इस गतिविधि का उपयोग किया था।

गतिविधि-3

नवाचार से संबंधित कुछ विडियो के लिंक नीचे दिए गए हैं। इन्हें दिखाएँ और परिचर्चा करें :

प्रार्थना सभा : https://youtu.be/OBO0bZ8yJ3g?si=-Z6HHEUtXJn4zgQv

हाथ धुलाई दिवस : https://youtu.be/7UP_6uMJjy0?si=fye0Pn3RSTvSV3RH

संख्या ज्ञान : https://youtu.be/L6bKTSGdUxg?si=oip4khyVzo6385NI

इनसाइड-आउटसाइड एक्टिविटी : https://youtu.be/wPEhSdpYano?si=LtUmI_DAL0-pmWE-

4 C एक्टिविटी : https://youtu.be/vBpG0Q3gcTA?si=MDSoI91xn0WMC8V7

परिचर्चा:

नवाचार की विशेषताएँ क्या-क्या हो सकती हैं?

संकेत:

- धन, समय एवं श्रम की बचत
- एक साथ सभी को दिशा प्रदान करना
- प्रत्यक्ष एवं स्थाई ज्ञान प्रदान कर पाना
- अधिगमकर्ता को क्रियाशील बनाना
- शिक्षा को समय-सापेक्ष परिवर्तनशील बनाना
- विद्यार्थियों में अन्तर्निहित क्षमताओं की पहचान
- शिक्षा सुविधाओं में वृद्धि करना
- विभिन्न शैक्षिक इकाइयों में समन्वय स्थापित करना
- शीघ्र एवं सटीक मूल्यांकन
- शिक्षा का गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास
- बच्चों को वैज्ञानिक एवं तकनीकी ज्ञान प्रदान करना
- शिक्षा को सार्वजनिक एवं आसान बनाना
- प्रजातान्त्रिक मूल्यों की स्थापना करना
- पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में नवीनता
- विद्यालयी वातावरण को अधिगम सापेक्ष बनाना
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं को सुचारु रूप से संम्पन्न करना
- विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाना
- संपूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया को गतिशील बनाना

परिचर्चा:

शिक्षा में नवाचार की क्या आवश्यकता है?

संकेत:

- शैक्षिक नवाचारों की सहायता से अधिगमकर्त्ताओ(छात्र) को क्रियाशील बनाया जा सकता है तथा अधिगम हेतु उसे प्रेरित किया जा सकता है.
- शैक्षिक नवचारों की सहायता से विद्यार्थियों में अंतर्निहित क्षमताओं की पहचान कर उनका विकास किया जा सकता है.
- सम्पूर्ण शैक्षिक प्रक्रिया को गतिशील बनाने के लिए.
- शीघ्र एवं सटीक मूल्यांकन के लिए.
- पाठ्य सहगामी क्रियाओं को सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए.
- शिक्षा के गुणात्मक एवं मात्रात्मक विकास के लिए.

परिचर्चा:

विद्यालय में नवाचार का क्या महत्व है?

संकेत:

- यह एक नवीन विचार है.
- यह स्थायी होता है.
- यह आसानी से किया जा सके.
- यह एक उद्देश्यपूर्वक किया जाने वाला कार्य है.
- नवाचार के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयास किया जाता है.
- नवाचार उपयोगिता की दृष्टि से किया जाने वाला कार्य है.
- प्रचलित विधियों की अपेक्षा नवाचार को अधिक अच्छा माना जाता है.

परिचर्चा:

गतिविधि -3 में आपने कुछ नवाचार के वीडियो देखे, अब आप बताइए कि नवाचार किन-किन क्षेत्रों में किया जा सकता है?

संकेत:

समुदाय की भागीदारी में:-

- विद्यालय प्रबंधन समिति की बैठक
- विद्यालय विकास

- विद्यालय प्रबंधन
- विद्यार्थी,शिक्षक,शिक्षा अधिकारी,थाना प्रभारी,जनप्रतिनिधि आदि

शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में:-

- नई तकनीक के उपयोग
- परियोजना आधारित शिक्षण
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों के द्वारा
- व्यावसायिक शिक्षण
- विषयवार शिक्षण पद्धति में नवाचार:- विज्ञान, गणित, भाषा एवं सामाजिक अध्ययन आदि
- स्वास्थ्य शिक्षा में नवाचार:- योग शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य, स्वस्थ जीवन शैली के द्वारा

शिक्षक के व्यक्तिगत विकास में:-

- तकनीकी क्षेत्र
- विषयवार क्षेत्र
- व्यावहारिक क्षेत्र
- पेशेवर विकास

संदर्भ

NEP 2020

International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS) 97 ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 97-100

International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS) 97ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 97-100

मूल्यांकन प्रश्न

1. क्या आपको लगता है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में नवाचार की आवश्यकता है?
2. अपने विद्यालय में किए गए नवाचारों की सूची बनाइए।
3. किसी एक नवाचार का मूल्यांकन करते हुए बताइए कि वह अपने उद्देश्य की पूर्ति में कितना सफल है?
4. आपके विद्यालय में किन क्षेत्रों में नवाचार की आवश्यकता है?

अतिरिक्त पाठ्य सामग्री

- NIEPA: विद्यालय नेतृत्व का विकास: हस्त पुस्तिका
- The Innovator's Dilemma- Clayton Christensen
- The Innovator's Solution- Christensen co-authored with Michael Raynor

मोड्यूल 5.2

नवाचार : शिक्षण संस्थान का केंद्र बिंदु

अधिगम प्रतिफल

- विद्यालय प्रधान नवाचारों के लिए मुख्य प्रेरणा स्रोत
- नए विचारों की खोज के लिए संवाद, विचार मंथन और योजना
- नए विचारों एवं पद्धतियों का स्वागत

महत्वपूर्ण शब्द (Key words): सृजनात्मक, सकारात्मक सोच, क्षमता वर्धन, अनुसंधान, प्रयोग, योजना निर्माण, विचार, संवाद ,सम्मान आदि।

भूमिका

शिक्षण संस्थान के अद्यतन विकास में नवाचार की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षण संस्थान शिक्षक के पेशेवर विकास के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है। शिक्षण संस्थान में ही आपसी तालमेल, आपसी समन्वय के द्वारा नई-नई बातों को समझते हैं एवं जीवन की चुनौतियों के लिए तैयार होते हैं। शिक्षण संस्थान नवाचार के लिए प्रेरित करता है और नवाचार के अवसर देता है। शिक्षण संस्थान संवादों, विचार मंथन के लिए एक मंच प्रदान करता है तथा भविष्य के लिए सकारात्मक योजना कैसे बनाई जाए इसकी अंतर्दृष्टि देता है। विद्यालयों में शिक्षण अधिगम एवं पद्धतियों में तेज़ी से गुणात्मक सुधार नवाचार के द्वारा ही संभव है।

केस स्टडी:1

यह केस स्टडी दुर्गम सुदूरवर्ती पहाड़ पर्वतों से घिरे उत्क्रमित उच्च विद्यालय, केसलपुर, सिमडेगा, झारखंड से संबंधित है। यह विद्यालय विभिन्न प्रकार संरचनात्मक एवं अन्य समस्याओं-चुनौतियों से घिरा हुआ था। इस विद्यालय में श्री अमोद कुमार रंजन ने जब विद्यालय का प्रभार ग्रहण किया तो उन्होंने ठान लिया कि इसमें यथोचित कार्रवाई एवं योजनाबद्ध तरीके से कार्य करने की आवश्यकता है। उनके द्वारा सर्वप्रथम शिक्षकों, एस.एम.सी. सदस्यों, अभिभावकों के साथ आवश्यक बैठक की। बैठक के उपरांत तय किया गया कि राशि के अभाव में वे कुछ नहीं कर सकते। इसके बाद उन्होंने जन-प्रतिनिधियों एवं प्रखंड विकास पदाधिकारी के पास अपनी बातों को रखा। उनसे

मदद के लिए अनुरोध किया जिसके सकारात्मक परिणाम निकले। प्रारंभ में उन्होंने स्वयं ही खर्च का वहन किया, फिर भी पीछे नहीं हटे और उन्होंने विद्यालय का संरचनात्मक परिवर्तन के द्वारा बच्चों को विद्यालय की ओर आकर्षित करने के लिए अनेक सुधारात्मक कार्य प्रारंभ किए। विद्यालय प्रधान के रूप में उन्होंने अपने सहयोगियों के साथ मिलकर अनेक काम किया जो निम्नलिखित है:

- विद्यालय कक्षा कक्ष एवं विद्यालय भवन का सुंदर रंग रोगन कराना
- शौचालय में रनिंग वाटर की व्यवस्था एवं टाइल्स लगवाना
- गीत इत्यादि के द्वारा बच्चों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाना
- शिक्षकों के नेतृत्व में बच्चों द्वारा फुलवारी एवं किचन गार्डन को विकसित करवाना

प्रयास के परिणाम:

- उनके प्रयास से विद्यालय 5स्टार की श्रेणी में शामिल है।
- राज्य के द्वारा विद्यालय स्वच्छता पुरस्कार से सम्मानित भी किया जा चुका है।
- उपस्थिति एवं नामांकन में भी बढ़ोतरी हुई है।
- नामांकन बढ़कर लगभग 4 गुणा हो चुका है।
- मैट्रिक में परीक्षाफल में भी सुधार हुआ है। यह 25% से बढ़कर 97% हो चुका है।

ये सभी परिवर्तन विद्यालय प्रधान,शिक्षकों ,एसएमसी सदस्यों एवं जनप्रतिनिधियों के साथ आपसी तालमेल बनाकर हासिल किया गया।

चर्चा के प्रश्न :

- विद्यालय में परिवर्तन के लिए मुख्य कारक कौन थे?
- विद्यालय में सुधार के लिए किन-किन क्षेत्रों में नवाचार किया गया होगा?
- विद्यालय में परिवर्तन के लिए विद्यालय प्रधान की योजना क्या रही होगी?

निष्कर्ष : विद्यालय प्रधान नवाचार का मुख्य प्रेरणा स्रोत होते हैं। वे सभी हितधारकों के साथ सुनियोजित योजना बनाकर इसे क्रियान्वित कर सकते हैं।

गतिविधि-1 (मकर जाल)

सभी प्रतिभागी को 5-6 समूहों में बाँट दें। सभी समूहों को एक समस्या लिखने को कहें। सभी समूह समाधान के लिए किन हितधारकों से संपर्क करेंगे उनके रूप में अपने समूह के प्रतिभागी को संवाद के लिए तैयार करें। अब सभी समूहों को रस्सी का गोला दें। विद्यालय प्रधान संवाद शुरू करेंगे और इसके बाद जिनके-जिनके बीच बात होगी रस्सी उन्हें दिया जाएगा। इस तरह एक मकड़ी का जाल बनेगा।

निष्कर्ष:

- विद्यालय प्रधान के चुनौतियों का निदान करने में हमेशा आगे आना है।
- विद्यालय में नवाचार सिर्फ और सिर्फ विद्यालय प्रधान की जिम्मेदारी नहीं है। नवाचार कोई भी हितधारक कर सकता है, जैसे- विद्यार्थी, शिक्षक आदि।
- विद्यालय के सर्वांगीण विकास में विद्यालय प्रधान की भूमिका अग्रणी होती है। वह सभी हितधारकों के मध्य संवाद का सूत्रधार होता है।
- विद्यालय प्रधान विद्यालय का नेतृत्वकर्ता, अनुश्रवणकर्ता सलाहकार एवं मार्गदर्शक होता है।

परिचर्चा:

नवाचार के क्रियान्वयन के कितने चरण हो सकते हैं?

(**संकेत:-** समस्या की पहचान, विचार विमर्श, समाधान, पायलट, परीक्षण और संशोधन, समीक्षा, पुनरवलोकन)

केस स्टडी:2

एक विज्ञान शिक्षिका बच्चों को विभिन्न गतिविधि कर बाहर मैदान में पढ़ाती थी। एक दिन वह बच्चों को किचन गार्डन में ले जाकर झखड़ा जड़ और मुसला जड़ में अंतर बता रही थी। शिक्षक के चारों ओर बच्चे भीड़ लगाकर उनकी बातों को सुन रहे थे। तभी उसे विद्यालय के प्रधान अध्यापक उधर से गुजरे। शिक्षक को ऑफिस में बुलाए और उन्हें डांटते हुए बोले - अभी परीक्षा का समय है बच्चों की पढ़ाई पर ध्यान दीजिए बाहर इस तरह ये बच्चे अनुशासनहीन दिखते हैं। शिक्षिका अनुत्तरित उनकी बातों को सुनती है।

चर्चा के प्रश्न

- विद्यालय प्रधान की भूमिका कैसी थी ?
- विद्यालय प्रधान के लिए उपयुक्त व्यवहार क्या था?
- क्या विद्यालय प्रधान किसी विद्यार्थी शिक्षक अभिभावक या किसी अन्य हितधारकों के विचारों का सम्मान करते है?

निष्कर्ष:

- विद्यालय के सभी हितधारकों को नए विचारों को समझना आवश्यक है
- नए विचारों का मूल्यांकन करते हुए उसे प्रोत्साहित करना चाहिए
- विचारों/पद्धतियों का स्वागत करने से उसके क्रियान्वयन को पुनर्बलन मिलता है, जिससे एक उत्साहवर्धक वातावरण बनता है
- यदि व्यक्तिगत तौर से सहमति न हो तो भी नए विचारों/पद्दतियों की सुनना एवं समझने का प्रयास करना तथा सुधार के सुझाव देना
- नए विचार/पद्धति अच्छा लगे तो प्रोत्साहित करना

मूल्यांकन प्रश्न:

- विद्यालयों में नवाचार का मुख्य प्रेरणास्रोत कौन होता है?
- विभिन्न हितधारकों के मध्य संवाद स्थापित करने के लिए विद्यालय प्रधान में किन गुणों का होना आवश्यक है?
- नवाचार के लिए योजना बनाना कितना महत्वपूर्ण है?
- नए विचारों एवं पद्धतियों का स्वागत किस प्रकार किया जाता है?
- अपने विद्यालय की किसी समस्या के निदान के लिए नवाचार की योजना बनाएँ।

संदर्भ

- **विद्यालय नेतृत्व का विकास** (हस्तपुस्तिका), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

अतिरिक्त पाठ्य सामग्री

- **विद्यालय नेतृत्व का विकास** (हस्तपुस्तिका), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- **शिक्षा शास्त्रीय नेतृत्व: विद्यालयों में अधिगम नेतृत्व के लिए हस्तपुस्तिका,** राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

मॉड्यूल 5.3

झारखंड के विद्यालयों में नवाचार की संस्कृति का विकास

अधिगम प्रतिफल

1.9 नवाचार : प्रयोगों और अनुसंधान को बढ़ावा

1.10 उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति

1.11 शिक्षकों/अभिभावकों/विद्यार्थियों के दृष्टिकोण का सम्मान

1.12 चुनौतियों की पहचान एवं समाधान

1.13 नवाचारक के रूप में छात्र, अध्यापक तथा समुदाय

1.14 नवाचारों का दस्तावेजीकरण

1.15 नवाचारों की मान्यता एवं पुरस्कार

महत्वपूर्ण शब्द (Key Words): नवाचार, सकारत्मक परिवर्तन, अनुसंधान, काल्पनिक अवरोध, सहभागिता, प्रतिफल, उपलब्ध संसाधन, अतिरिक्त संसाधन, अधिगम प्रतिफल

भूमिका

सकारात्मक परिवर्तन एक जीवंत, गतिशील और आवश्यक क्रिया है, जो विद्यालय को वर्तमान व्यवस्था के अनुकूल बनाती है। इसके लिए आवश्यक है कि विद्यालय की समस्याओं को चिह्नित किया जाए, उनमें से कौन सी समस्याएँ चुनौतियों के रूप में ली जा सकती हैं उन्हें देखा जाए और उन चुनौतियों के लिए प्रयोग और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए। यही प्रयोग और अनुसंधान नवाचार हो सकते हैं। नवाचार, उपलब्ध संसाधनों के माध्यम से ही अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति में सहायक हों। जब हम कई अतिरिक्त संसाधनों पर आश्रित हो जाते हैं तो अपेक्षित प्रयोग तक पहुँचने में बाधा आ जाती है। समस्याओं की पहचान करने और चुनौतियों के लिए नवाचार की योजना बनाने में विद्यालय प्रमुख को सभी हितधारकों के दृष्टिकोण का सम्मान करना चाहिए विशेषकर शिक्षकों/अभिभावकों/विद्यार्थियों का विचार अवश्य जानना चाहिए क्योंकि इनका हित विद्यालय से सीधे जुड़ा होता है।

चर्चा करें - झारखंड के विद्यालयों में नवाचार की संस्कृति किन मायनों में लाभकारी हो सकते है?

निष्कर्ष:- शिक्षा की गुणवत्ता सुनिश्चित करना, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक विकास, रुचिपूर्ण शिक्षा, सकारात्मक व्यवहार, वैज्ञानिक एवं तकनीकी प्रगति के अनुरूप शिक्षा प्रणाली का विकास, रोजगार के अवसर में वृद्धि एवं सामाजिक समस्याओं का समाधान आदि।

चुनौतियों की पहचान एवं समाधान

यह स्वाभाविक है कि समस्याएँ हमें परेशान करती हैं। लेकिन जब हम उन्हें चुनौती के रूप में लेते हैं तो ये हमारे लिए एक अवसर ले कर आती है। ऐसा अवसर जिसमें परिवर्तन करने का मौका है। इसलिए यह आवश्यक है कि हम समस्याओं की बारीकी से पहचान करें कि किस समस्या को चुनौती के रूप में लिया जा सकता है। चुनौतियों की समझ ही हमें नवाचार करने को प्रेरित करती हैं।

गतिविधि-1 (बाधा पार)

समूह के 5-10 प्रतिभागी मैदान/खुले स्थल के एक छोर पर एक पंक्ति में खड़े हो जाएँगे। उनके सामने कुछ-कुछ दूरी पर तनी हुई रस्सियों का अवरोध होगा जिन्हें पार करते हुए उन्हें तेज़ी से मैदान/खुले स्थल के दूसरे छोर तक जाना होगा। वहाँ पहुँचने के बाद वे प्रतिभागी फिर से एक पंक्ति में खड़े होने और उनकी आँखों पर पट्टी बाँध दी जाएगी। अब उन्हें निर्देश दिया जाएगा कि वे फिर से रस्सियों का अवरोध पार करते हुए मैदान/खुले स्थल के दूसरे छोर तक जाएँ। आँखों पर पट्टी बांधते ही सभी अवरोध हटा लिए जाएँगे। प्रतिभागी काल्पनिक रूप से अवरोधों को महसूस करते हुए दूसरे छोर तक जाएँगे।

निष्कर्ष: कई समस्याएँ काल्पनिक होती हैं। इसलिए चुनौतियों को वास्तविक रूप में स्वीकार करने के लिए आवश्यक है कि वास्तविक समस्याओं की पहचान की जाए।

गतिविधि-2 (विडियो दिखाएँ और प्रश्न करें)

वीडियो: https://youtu.be/YOllmFfELT8?si=iDDf2JMXqJDvhkJb

प्रश्न:

- इस विडियो में आपको सबसे अच्छी बात क्या लगी?
- अपने विद्यालय में आप इनमे से किन नवाचारों का प्रयोग करेंगे?

- आपने अपने विद्यालय में उपलब्ध संसाधनों का भिन्न-भिन्न तरीकों से कैसे उपयोग किया है?
- एक विद्यालय प्रमुख/शिक्षक के रूप में क्या आपने अपने विद्यालय के अध्यापकों, विद्यार्थियों तथा अन्य कर्मचारियों को कभी नवाचार संबंधी गतिविधियों से जोड़ा है? यदि उन्होंने कुछ नवाचार तैयार किया है तो आपने विद्यालय में उसका किस तरह से उपयोग किया है?

गतिविधि-3 (समस्या और समाधान)

सभी प्रतिभागियों को 5-6 समूह में बाँट दें। सभी प्रतिभागी आपस में विमर्श कर विद्यालय की कोई दो समस्या को पर्ची पर लिखेंगे। इन पर्चियों को आपस में मिला दें और फिर सभी समूहों को एक-दूसरे का अदल-बदल कर पर्ची दें। दूसरा समूह किसी एक समस्या को चुनौती के रूप में स्वीकार कर उसके निये नवाचार की योजना तैयार करेंगे।

निष्कर्ष: हम चुनौतियों को स्वीकार करने में सक्षम हैं और इनके लिए नवाचार तैयार कर सकते हैं।

नवाचार का उदाहरण-1

विद्यालय का नाम: डिस्ट्रिक्ट आर.के. रमा साहू सी.एम्. एस.ओ.ई. गढ़वा

जिला: गढ़वा **ब्लॉक:** सदर **यू डायस कोड:**20010400209

चुनौती	**विद्यार्थियों की उपस्थिति में कमी**
उद्देश्य	विद्यार्थियों की नियमित उपस्थिति बढ़ाना
योजना	बच्चों की अनियमित उपस्थिति के प्रति शिक्षक और SMC की सदस्य चिंतित थे । इस समस्या को दूर करने के लिए दोनों ने मिलकर एक उपाय निकाला। उन्होंने विद्यालय में लगातार अनुपस्थित विद्यार्थियों की सूची बनाई और उसे सूची को वहाँ के मंदिर के पुजारी और मस्जिद के मौलाना को भी दी गई। प्रतिदिन मौलाना अजान के बाद और पुजारी मंदिर के

	माइक से उन बच्चों को विद्यालय नियमित रूप से जाने का निर्देश देने लगे।
नवाचार का नाम	स्कूल जाने की अब लो ठान. यही देगा सुनाई भजन हो या अजान
आवश्यक संसाधन	माइक
क्रियान्वयन- अवधि **क्रियान्वयन- प्रक्रिया**	विद्यालय की उपस्थिति कम होने पर सभी शिक्षक शिक्षिकाएं प्रत्येक वर्ग के उन बच्चों की सूची बनाए जो नियमित रूप पर बिना सूचना के विद्यालय नहीं आते हैं। समुदाय की सहायता से अपने क्षेत्र में स्थित मंदिर और मस्जिद जाकर वहां के पुजारी तथा मौलाना से संपर्क किया तथा उन्हें विद्यालय में अनुपस्थित रहने वाले बच्चों की सूची तैयार सौंपी। उस सूची से मस्जिद में अजान के बाद मौलाना उन बच्चों के नाम बुलाने लगे तथा मंदिर के माइक से भी लगातार अनुपस्थित रहने वाले बच्चों की नाम की घोषणा होने लगी जिससे वे उनके माता-पिता सचेत हुए और नियमित रूप से बच्चों को विद्यालय भेजने लगे। बच्चों में भी शर्मिंदगी महसूस हुई और शिक्षा के महत्व को समझते हुए विद्यालय जाने लगे।
फोटो, विडियो लिंक	
प्रभाव	विद्यालय की उपस्थिति में 25 से 30% की वृद्धि हुई।
विश्लेषण	जब समुदाय सक्रिय होकर वहाँ के धार्मिक संस्थानों का उपयोग बच्चों को विद्यालय भेजने हेतु प्रेरित करने लगे तो वहाँ के अभिभावकों में भी एक जागरूकता आई और अपने बच्चों को नियमित विद्यालय भेजने लगे।
निष्कर्ष	इस नवाचार में हमें बस एक नई सोच की आवश्यकता हुई। नई सोच से हम समुदाय की सहभागिता के साथ अपनी चुनौतियों का सामना सफलतापूर्वक कर पाए।

चर्चा करें :

- उपरोक्त नवाचार में आपके अनुसार क्या-क्या विशेषताएँ हैं?
- इस नवाचार से बच्चे में किस अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति होती है?
- आपके विद्यालय में इस नवाचार के क्रियान्वयन में क्या-क्या चुनौतियाँ हो सकती है?

नवाचार का उदाहरण-2

विद्यालय का नाम: पब्लिक हाई स्कूल कुज्जू रामगढ़

जिला: रामगढ़ **ब्लॉक:** मांडू **यूडायस कोड:**20241208710

चुनौती	बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि का कम होना।
उद्देश्य	बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि जागृत कर उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण उत्पन्न करना।
योजना	बच्चों को विज्ञान की पुस्तक में दिए गए चित्रों को रंगोली के रूप में बनाने के लिए प्रोत्साहित करना।
नवाचार का नाम	'रंगोली के संग विज्ञान पढ़े हम'
आवश्यक संसाधन	रंगोली का रंग, प्राकृतिक वस्तु रंगोली के रंग के रूप में जैसे पत्ता ,बालू इत्यादि।
क्रियान्वयन- अवधि	प्रत्येक महीने का अंतिम शनिवार
क्रियान्वयन- प्रक्रिया	सभी बच्चों को समूह बनाकर उनकी पुस्तक में दिए गए चित्रों का रंगोली बनाने के लिए कहा गया। सभी बच्चे अपने समूह में चर्चा कर रंगोली का रंग लाए और मिलकर रंगोली बनाएं रंगोली बनाने के क्रम में उन्हें विज्ञान के चित्रों का अध्ययन भी करा दिया गया और पुनः शिक्षिका इस रंगोली से उसे चित्र के बारे में बताती है साथ ही साथ बताने के क्रम में उसे उन्हें विज्ञान की उस विषय वस्तु से भी परिचित करा दिया गया।

फोटो, विडियो लिंक	
प्रभाव	इस गतिविधि को करने से बच्चों में विज्ञान के प्रति रुचि जागृत हुई और उन्हें विज्ञान एक मजेदार विषय लगने लगा और विज्ञान पढ़ने में भी सरसता आने लगी। इसका एक प्रकार यह भी हुआ कि बच्चों का बोर्ड परीक्षा में विज्ञान विषय में रिजल्ट बहुत अच्छा रहने लगा और विद्यालय की पांच बच्चियों का चयन **सीसीएल** के 'लाडला लाडली योजना' के तहत **आईआईटी** की तैयारी के लिए हुआ।
विश्लेषण	विज्ञान को एक नीरस विषय के रूप में जाना जाता है। इस नवाचार में शिक्षिका ने विज्ञान को पढ़ने का एक नया नजरिया बताया। जिसमें बच्चे सक्रिय रूप से शामिल रहे। सभी प्रयास बच्चों के द्वारा हुआ शिक्षिका उन्हीं के प्रयासों में और जोड़ते हुए अधिगम बिंदु तक ले आई। ऐसा करने में बच्चे स्वयं भी क्रियाशील रहे स्वयं नवाचार करने भी लगे जैसे जो बच्चे

	रंगोली नहीं ला पाए थे वे प्राकृतिक वस्तु जैसे पत्ता, बालू, विभिन्न रंगों की मिट्टी का प्रयोग करके रंगोली बनाने लगे।
निष्कर्ष	शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में नवाचार के द्वारा किसी भी विषय वस्तु को रोचक तरीके से बच्चों के समक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है और उन्हें विषय वस्तु को रोचक तरीके से जोड़कर अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति की जा सकती है।

चर्चा करें :

- उपरोक्त नवाचार में आपके अनुसार क्या-क्या विशेषताएँ हैं?
- इस नवाचार से बच्चे में किस अधिगम प्रतिफल की प्राप्ति हो रही है?
- आपके विद्यालय में इस नवाचार के क्रियान्वयन में क्या-क्या चुनौतियाँ हो सकती है?

नवाचारों का दस्तावेजीकरण

विद्यालय का नाम:

जिला: **ब्लॉक:** **यूडायस कोड:**

चुनौती	
उद्देश्य	
योजना	
नवाचार का नाम	
आवश्यक संसाधन	
नवाचार के सफल होने की अवधि	
क्रियान्वयन के चरण	
क्रियान्वयन- प्रक्रिया	
फोटो, विडियो लिंक	
प्रभाव	
विश्लेषण	
निष्कर्ष	

प्रधानाध्यापक का हस्ताक्षर:

नवाचारों की मान्यता एवं पुरस्कार

वैसे परिवर्तन जो नए हों, लागत प्रभावी हों, परिणाम देते हों और आवश्यकता या समस्या को संबोधित करने के लिए वर्तमान स्थिति को पूरी तरह महत्वपूर्ण रूप से बदल देते हैं. जिनका अनुकरण आवश्यकतानुसार संशोधन के साथ अन्य विद्यालयों में भी किए जा सके. इन्हें ही नवाचार कहा जाता है. ऐसे नवाचारों को मान्यता मिलनी ही चाहिए. इससे दूसरे विद्यालय लाभान्वित होते हैं एवं नवाचार को प्रोत्साहन मिलता है. इसकी शुरुआत विद्यालय से ही होनी चाहिए. विद्यालय प्रमुख इसकी सार्वजनिक रूप से प्रार्थना सभा/मीटिंग में सराहना कर सकते हैं. ब्लॉक/जिला/राज्य द्वारा भी समय-समय पर ऐसे नवाचारों को साझा करने के लिए कहा जाता है. ताकि उन्हें मान्यता दी जा सके. इसके अतिरिक्त राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर कई पुरस्कारों का भी प्रावधान है. इनमें से कुछ प्रमुख हैं :-

संस्था	पुरस्कार का नाम	संबंधित लिंक
NCERT	Promoting Innovative Practices and Experiments in Education for Schools and Teacher Education Institutions	https://ncert.nic.in/teacher-innovation.php?ln=en
Dept. Of Science and Technology, Ministry of India	Inspire Award - MANAK	https://dst-gov-in.translate.goog/government-efforts-encourage-school-children-innovate-broadening-base-innovation-pyramid?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc
NCERT	National Award to Teachers	https://nationalawardstoteachers.education.gov.in/hn/welcome.aspx
ZIIEE- Sri Aurobindo Society	Teacher Innovation Award	https://ziiei.com/teacherinnovationaward/

मूल्यांकन प्रश्न:

- नवाचार का प्रयोग झारखंड में प्रयोगों और अनुसंधानों को बढ़ावा देने में किस प्रकार सहायक होगी?
- विद्यालयों की चुनौतियों और सीमित संसाधनों के बीच क्या नवाचार की संभावनाएँ हैं?
- विद्यालय प्रमुख किस प्रकार विभिन्न हितधारकों के दृष्टिकोणों का सम्मान कर सकते हैं?
- अपने विद्यालय में किए गए किसी नवाचार का दिए गए फॉर्मेट में दस्तावेजीकरण करें।

संदर्भ:

- NIEPA - विद्यालय नेतृत्व का विकास हस्त पुस्तिका
- अरविंद गुप्ता - youtube video
- International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS) 97
  ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 01(II), January - March, 2023, pp. 97-100
- https://shikshantar-org.translate.goog/initiatives/innovations-shiksha/shikshantar-resource-center-homeschooling-unschooling-self-designed?_x_tr_sl=en&_x_tr_tl=hi&_x_tr_hl=hi&_x_tr_pto=tc

अतिरिक्त पाठ्य सामग्री:

1. **विद्यालय नेतृत्व का विकास** (हस्तपुस्तिका), राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
2. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020,** मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

माड्यूल निर्माण समूह

1. **डॉ. निरुपमा कुमारी** (सदस्य, स्टेट कोर कमिटी, SLA Jharkhand),
   विद्यालय- डिस्ट्रिक्ट रामरुद्र सी.एम्. एस.ओ.ई. चास, बोकारो
2. **मनीषा धवन** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, रामगढ़),
   विद्यालय- पब्लिक हाई स्कूल कुजू, रामगढ़
3. **प्रभात कुल्लू** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, सिमडेगा)
   विद्यालय- राजकीय उत्क्रमित +2 उच्च विद्यालय, पाकरटांड, सिमडेगा
4. **सुशील कुमार** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, गढ़वा)
   विद्यालय- जिला रा.कृ. रामासाहू मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय, गढ़वा
5. **हिमांशु शेखर** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, प.सिंहभूम)
   विद्यालय- मुख्यमंत्री उत्कृष्ट विद्यालय स्कॉट गर्ल्स, चाईबासा, प.सिंहभूम
6. **प्रवीण चंद्र यादव** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, दुमका)
   विद्यालय- प्रोजेक्ट उच्च विद्यालय बारापलासी, दुमका
7. **प्रशांत शाहदेव** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, लातेहार)
   विद्यालय- उत्क्रमित उच्च विद्यालय रोल, लातेहार
8. **डॉ. अंजू कुमारी** (सदस्य, जिला विद्यालय नेतृत्व केंद्र, जमशेदपुर)
   विद्यालय- डिस्ट्रिक्ट सी.एम्. एस.ओ.ई. बी.बी.एम्. वर्मा माइंस, जमशेदपुर
9. **संगीता कुमारी** (सदस्य, स्टेट कोर कमिटी, SLA Jharkhand)
   विद्यालय- मध्य विद्यालय कटकमसंडी, हजारीबाग